MONA LISA'S SMIRK:

Was there a Da Vinci Conspiracy?

मोनालिसा की कटु मुस्कान :

क्या डा विन्सी नामक साजिश थी?

द डा विन्सी कोड एक कल्पित कथानक के रूप में अनदेखा होने के लिये नहीं है। इसके तर्क का आधार कि यीशु मसीह का पुर्न उद्‌भव राजनैतिक उद्‌देश्यों के लिये हुआ था, मसीहियत की गहरी बुनियाद पर प्रहार करता है। इसके लेखक, डैन ब्राउन ने राष्ट्रीय टी0वी0 पर वक्तव्य दिया है कि कथानक काल्पनिक होने के बावजूद भी वह विश्वास करते हैं कि यीशु की पहचान सम्बन्धी घटनाओं का इसमें वर्णित वृत्तान्त सत्य है। अतः सत्य क्या है? आइये एक दृष्टि डालें।

- ❖ क्या यीशु ने मरियम मगदलीनी के साथ गुप्त विवाह कर रखा था?
- ❖ क्या यीशु की अलौकिकता की पुर्नरचना कॉन्स्टेनटाइन और कलीसिया के द्वारा की गयी थी?
- ❖ क्या यीशु के मूल प्रमाण नष्ट कर दिये गये?
- ❖ क्या हाल ही में खोजे गये अभिलेख यीशु के सम्बन्ध में सच्चाई बयान करते हैं?

क्या एक बडी भारी साज़िश का परिणाम यीशु के पुर्न उद्‌भव में है? पुस्तक और फिल्म 'द डा विन्सी कोड' के अनुसार ठीक ऐसा ही घटित हुआ है। पुस्तक के बहुत से दावे ऐसे हैं जिनसे यीशु से सम्बन्धित साज़िश की गन्ध आ रही है। उदाहरणार्थ, पुस्तक बताती है :

'' कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह रहा है कि यीशु जालसाज़ थे अथवा इस बात को ठुकरा रहा है कि वह पृथ्वी पर चले फिरे और लाखों लोगों को बेहतर जीवन के लिये प्रोत्साहित किया। हम सब जो कह रहे हैं वह यह है कि कॉन्स्टेनटाइन ने मसीह के ठोस प्रभाव और महत्व का लाभ उठाया और ऐसा करने में उसने मसीहियत के चेहरे को वह आकार प्रदान किया जैसा कि आज हम उसे जानते हैं।''[1]

क्या डैन ब्राउन की सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक को हिलाकर रख देने वाला यह दावा सत्य हो सकता है? अथवा क्या इसके तार्किक आधार के पीछे बेहतरीन साजिश से भरपूर उपन्यास की सामग्री मात्र है– कुछ ऐसे ही विश्वास के समान कि दूसरे ग्रह के प्राणी धमाके के साथ रोज़वैल, न्यू मैक्सिको पर उतरे थे अथवा जब जे0 एफ0 के की हत्या राजनैतिक कारणों से की गयी थी तब डेलास में उस घास से भरे हुए टीले पर एक दूसरा बंदूकधारी भी मौजूद था? दोनों ही सूरतों में, कहानी गहरी रोचकता लिये हुए है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ब्राउन की पुस्तक इस दशक की सर्वाधिक बिकने वाली कहानियों में से एक हो चुकी है।

यीशु सम्बन्धित साजिश

द डा विन्सी कोड का आरम्भ जैक्वैस साऊनीएर नामक फ्रांसीसी संग्रहालय के एक अध्यक्ष की हत्या से होता है। एक विद्वान हारवर्ड प्रोफेसर और एक सुन्दर फ्रांसीसी गुप्त सांकेतिक लिपि ज्ञाता को संग्रहालयाध्यक्ष द्वारा अपनी मृत्यु से पूर्व छोड़े गए सन्देश की गूढ़ लिपि को पढ़कर उसका अर्थ समझाने का कार्य सौंपा जाता है। सन्देश से नतीजे के रूप में प्रकट होती है मुनष्य जाति के इतिहास में प्रतिपादित सबसे बड़ी साजिश : रोमन कैथोलिक कलीसिया जिसे ओपस डी (Opus dei) कहा जाता है के गुप्त दल द्वारा छिपाया गया यीशु मसीह का एक वास्तविक सन्देश।

अपनी मृत्यु से पूर्व, संग्रहालयाध्यक्ष के पास वो प्रमाण थे जो मसीह के ईश्वरत्व को गलत सिद्ध कर सकते थे। हालांकि (कथानक के अनुसार) कलीसिया ने शताब्दियों तक प्रमाणों को मुद्रित होने से बचाने का प्रयास किया था, परन्तु महान् विचारकों और कलाकारों ने प्रत्येक जगह सांकेतिक सूत्र स्थापित कर रखे थे : चित्रकारियों में जैसे कि मोनालिसा एवं डा विन्सी द्वारा रचित अंतिम भोज, कथीड्रल कलीसियाओं के वास्तु–शिल्प में, यहाँ तक कि डिज़्नी कार्टूनों में भी। पुस्तक के मुख्य दावे यह हैं :

- रोमी सम्राट कॉन्स्टेनटाइन ने यीशु मसीह को ईश्वर के तुल्य बनाने की साज़िश रची।
- कॉन्स्टेनटाइन ने व्यक्तिगत रूप से नये नियम की पुस्तकों को चुना।
- पुरूषों द्वारा स्त्रियों का दमन करने के लिये रहस्यवादी सुसमाचार प्रतिबन्धित कर दिये गये थे।
- यीशु और मरियम मगदलीनी गुप्त रूप से विवाहित थे और उनके एक सन्तान थी।
- हज़ारों गुप्त दस्तावेज़ मसीहियत की मुख्य धाराओं को अप्रमाणित करते हैं।

ब्राउन अपनी साज़िश का प्रगटीकरण पुस्तक के काल्पनिक कथासार विशेषज्ञ, ब्रिटिश के शाही इतिहासकार सर लेह टीबिंग के माध्यम से करते हैं। एक बुद्धिमान पुराने विद्वान सा सम्मान देते हुए, टीबिंग गुप्त सांकेतिक लिपि ज्ञाता सोफी नेव्यू के समक्ष प्रकट करते हैं कि 325ई0 में निकाया की महासभा में ''मसीहियत के बहुत से पहलुओं पर वाद–विवाद किया गया और उन पर मत डाले गये।'', जिसमें यीशु की अलौकिकता भी शामिल है।

''जब तक कि वह क्षण इतिहास में नहीं आया,'' वह कहते हैं, ''यीशु को उनके चेलों द्वारा एक नाशमान भविष्यद्वक्ता के रूप में देखा जाता था ..... एक महान और शक्तिशाली मनुष्य, फिर भी मनुष्य नहीं।''

नेव्यू हतप्रभ रह जाती है, ''ईश्वर का पुत्र नहीं ?'' वह पूछती है।

टीबिंग समझाते हैं: ''यीशु'' का ''ईश्वर पुत्र'' के रूप में सिद्धिकरण अधिकारिक रूप से प्रस्तावित किया गया था और उस पर निकाया की महासभा द्वारा मत डाले गये थे।''

''ठहरें। क्या आप यह कह रहे हैं कि यीशु की अलौकिकता एक मत का नतीजा थी ?''

टीबिंग हतप्रभ गुप्त सांकेतिक लिपि ज्ञाता को बताते हैं ''इसके सापेक्ष करीब–करीब एक मत डाला गया था।'' [2]

अतः टीबिंग के अनुसार, जब तक कि 325ई0 में निकाया की महासभा नहीं हुई यीशु को परमेश्वर का दर्जा नहीं दिया गया, तब जबकि यीशु से सम्बन्धित मूल प्रमाण वर्णित करके प्रतिबन्धित और नष्ट कर दिये गये थे। अतः, सिद्धान्त के अनुसार, मसीहियत की सम्पूर्ण बुनियाद एक झूठ पर टिकी हुई है।

द डा विन्सी कोड अच्छी तरह से अपने कथानक को बेच चुका है, पाठकों से राय प्राप्त कर चुका है, जैसे कि, '' यदि यह सत्य नहीं होता यह प्रकाशित नहीं किया जा सकता था।'' किसी दूसरे ने यह कहा कि वह ''कभी कलीसिया में दुबारा पैर नहीं '' रखेगा। पुस्तक के एक समीक्षक ने इसकी प्रशंसा इसके ''त्रुटिरहित अनुसंधान'' के लिये की।[3] एक काल्पनिक कथानक के कार्य का बेहतरीन प्रचार।

एक क्षण के लिये आइये मान लें कि टीबिंग का प्रस्ताव सत्य हो सकता है। उस दशा में, निकाया की महासभा यीशु का समर्थन ईश्वरत्व के लिये करने का निर्णय क्यों करेगी?

'' यह सब सामर्थ के विषय में था'' टीबिंग जारी रखते हुए कहते हैं। मसीह मसायाह के रूप में कलीसिया और राज्य के कार्यानुपालन हेतु संकट था। बहुत से विद्वान ऐसा दावा करते हैं कि आरम्भिक कलीसिया ने यीशु को उसके मूल अनुयायियों से लगभग चुरा लिया था, उसके मानवीय सन्देश को चुराकर, इसे अलौकिकता के अभेद्य लिबास का आवरण पहनाया और अपनी निज शक्ति के विस्तार हेतु इसका प्रयोग किया।''[4]

बहुत सी सूरतों में, द डा विन्सी कोड वास्तविक रूप से एक साज़िश से भरपूर सिद्धान्त है। यदि ब्राउन के कथन दोषरहित हैं, तो हम झुठलाये जा चुके हैं – कलीसियाई तौर से, इतिहास द्वारा और बाइबिल के द्वारा। सम्भवतः उनके बजाय सर्वाधिक विश्वास हमें अपने माता–पिता और शिक्षकों पर करना है और यह सब कुछ एक सामर्थ को छिनने से बचाने के लिये होगा।

यद्यपि द डा विन्सी कोड एक काल्पनिक कथानक है। यह बहुत अधिक अपने तार्किक आधार वास्तविक घटनाओं पर (निकाया की महासभा), वास्तविक लोगों (कॉन्स्टेनटाइन और एरिअस) और वास्तविक दस्तावेज़ों (रहस्यवादी सुसमाचारों) पर आधारित नहीं है। यदि हमें साज़िश की तह तक पहुँचना हो तो, हमारी कार्ययोजना ब्राउन के दोषारोपण पर ध्यान केन्द्रित करना और तथ्यों को काल्पनिक कथानक से निकाल फेंकना ही होगी।

कॉन्स्टेनटाइन और मसीहियत

रोमी साम्राज्य पर कॉन्स्टेनटाइन के शासन से पहले शताब्दियों तक मसीहियों को अत्यधिक सताया जा चुका था। परन्तु तब, युद्ध में डेरा डालते समय कॉन्स्टेनटाइन ने आकाश में एक क्रूस की चमकदार आकृति देखे जाने की घोषणा की जिस पर अंकित था ''इसके द्वारा विजय प्राप्त करो।'' वह युद्ध में क्रूस के उस चिहन के अधीन होकर उतरा और साम्राज्य पर अधिकार कर लिया।

कॉन्स्टेनटाइन का प्रत्यक्ष रूप से मसीहियत को ग्रहण करना कलीसियाई इतिहास में जल प्रपात के समान था। रोम एक मसीही साम्राज्य में बदल गया। तुलनात्मक तौर पर लगभग 300 वर्षो में पहली बार यह सुरक्षित था और यहाँ तक कि मसीही हो जाना शांतिमय था।

बहुत समय तक मसीही अपने विश्वास के लिये नहीं सताये गये ।तब कॉन्स्टेनटाइन अपने उस पूर्वी और पश्चिमी साम्राज्य को एकता के सूत्र में बाँधने की तलाश में निकला जो कि बुरी तरह से आपसी मतभेद से उत्पन्न हुई सम्प्रदायिकता, विशेष विचारधारा वाली कट्टर सम्प्रदायिकता और पूजा करने की विशेष विधियों द्वारा खंडित हो चुका था और अधिकतर यीशु मसीह की पहचान के मुद्दे को एकमात्र बिन्दु बनाकर उस पर ध्यान केन्द्रित किये रहता था।

ने कुछ ऐसी अन्दरूनी सच्चाइयाँ हैं ये जो द डा विन्सी कोड में हैं और अन्दरूनी सच्चाइयॉ किसी भी साज़िश भरे सिद्धान्त के लिये आवश्यक होती हैं, परन्तु पुस्तक का कथानक कॉन्स्टेनटाइन को एक साजिश रचने वाले के रूप में परिवर्तित कर देता है। अतः आइये हम एक मुख्य प्रश्न पर ध्यान केन्द्रित करें जो ब्राउन के सिद्धान्त द्वारा उठाया गया हैः क्या कॉन्स्टेनटाइन ने यीशु की अलौकिकता से सम्बन्धित मसीही सिद्धान्त की खोज की थीं?

यीशु को ईश्वर तुल्य बनाना

ब्राउन के दोषारोपण का उत्तर देने के लिये, पहले तो हमें यह निश्चित करना है कि कॉन्स्टेनटाइन द्वारा कभी निकाया पर महासभा को बुलाने से पूर्व मसीही सामान्य रूप से किस विश्वास को मानते थे?

मसीही लोग प्रथम शताब्दी से ही ईश्वर के रूप में यीशु की आराधना करते चले आ रहे थे। परन्तु चौथी शताब्दी में, पूरब के एक कलीसियाई अगुवे, एरिअस ने परमेश्वर के एकमात्र स्वरूप का पक्ष लेने के लिये एक योजनाबद्ध कार्याक्रम का आयोजन प्रारम्भ किया। उसने इस बात की शिक्षा दी कि यीशु एक विशेष रीति से रचा गया व्यक्तित्व थे, जो कि पद में स्वर्गदूतों से ऊँचे पर थे, परन्तु ईश्वर नहीं थे। हालांकि दूसरी ओर एथेनेसियुस और अधिकतर कलीसियाई अगुवे सहमत थे कि यीशु देह रूप में ईश्वर ही हैं। अपने साम्राज्य में शांति स्थापित करने और पूर्वी और पश्चिमी भागों को एकता के सूत्र में बाँधने की आशा रखते हुए, कॉन्स्टेनटाइन इस विवाद को सुलझाना चाहता था। अतः 325 ई0 में उसने, सम्पूर्ण मसीही संसार से 300 से अधिक प्रधान मसीही अगुवों (बिशप) की महासभा निकाया (जो अब तुर्किस्तान का एक हिस्सा है।) पर बुलायी। सबसे रोमांचक प्रश्न यह है कि क्या आरम्भिक कलीसिया का विचार था कि यीशु सृष्टिकर्त्ता थे या मात्र एक रचना थे परमेश्वर के पुत्र या एक बढ़ई के पुत्र? तो, प्रेरितों ने यीशु के विषय में क्या शिक्षा दी? उनके संग्रहीत प्रथम कथनानुसार, वे उसे परमेश्वर का दर्जा देते थे। यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान के लगभग 30 वर्ष पश्चात्, पौलुस फिलिप्पियों को लिखता है कि यीशु मनुष्य रूप में परमेश्वर थे (फिलिप्पियों 2:6–7 एन एल टी) और यूहन्ना उनका एक नज़दीकी गवाह, यीशु की अलौकिकता की पुष्टि इस निम्नलिखित अवतरण में करता है :

आदि में वचन था। वह परमेश्वर के साथ था और वह परमेश्वर था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ। कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में पृथ्वी पर वास किया (यूहन्ना 1:1–4,14, एनएलटी)।

यूहन्ना अध्याय 1 का यह अवतरण, एक प्राचीन अभिलेख में खोजा जा चुका है और इसकी द्वितीय प्रतिलिपि 175–225 ई0 में तैयार हुई। अतः यीशु को कॉन्स्टेनटाइन द्वारा निकाया की महासभा को बुलाने से सैकड़ों वर्षों से भी अधिक पूर्व स्पष्ट रूप से परमेश्वर के रूप में कहलाया गया है। अब हम देखते हैं कि गहन जाँच पड़ताल द्वारा मूल प्रतिलिपि के प्रमाण, डा विन्सी कोड के इस दावे कि यीशु की अलौकिकता चौथी शताब्दी की एक खोज है का खण्डन करते हैं। परन्तु इतिहास हमें निकाया की महासभा के विषय में क्या बताता है? ब्राउन अपनी पुस्तक में टीबिंग के द्वारा दावा करते हैं कि निकाया में मसीही प्रधान अगुवों के बड़े समूह ने एरिअस के विश्वास कि यीशु एक ''नाशमान भविष्यद्वक्ता'' थे को नियम अर्न्तगत माना और यीशु की अलौकिकता के सिद्धान्त को ''सापेक्षिक निकटतम मत'' के द्वारा स्वीकार किया। सत्य या मिथ्या?

वास्तविकता में, मत पैरों तले की ज़मीन खिसकाने के लिये था : 318 मसीही प्रधान अगुवों में से मात्र दो के बीच मतभेद था। जबकि एरिअस का विश्वास था कि पिता एकमात्र परमेश्वर थे और वो यीशु उनकी उत्कृष्ट रचना थे। महासभा ने निष्कर्ष निकाला कि यीशु और पिता एक ही अलौकिक तत्व से हैं।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा असाधारण, एक साथ वास करने वाले, एक समान ईश्वरीय व्यक्तित्व परन्तु एक ही परमेश्वर होने के विश्वासयोग्य थे। तीन व्यक्तित्वों में एक परमेश्वर होने का यह विश्वास निस्सीन मसीही मत के नाम से जानने योग्य बन गया और मसीही विश्वास की केन्द्रीय शाखा है। अब, यह सत्य है कि एरिअस मन फिराने में समर्थ था और विश्वास करने योग्य प्रभाव रखता था। पैरों तले जमीन खिसकाने वाले मत का आगमन वैचारिक वाद्–विवाद के पश्चात हुआ। परन्तु अन्त में महासभा ने उन्मुक्त कंठ से एरिअस को विधर्मी होने योग्य घोषित कर दिया, क्योंकि उसकी शिक्षाएँ इन शिक्षाओं का खण्डन करती थीं जो प्रेरित यीशु की अलौकिकता के विषय में सिखा चुके थे।

इतिहास भी इस बात की पुष्टि करता है कि यीशु ने सार्वजनिक रूप से उस आराधना को क्षमा कर दिया था जो उसके चेलों ने उसके लिये की और जैसा कि हम देख चुके हैं, पौलुस और अन्य प्रेरितों ने स्पष्ट रूप से शिक्षा दी कि यीशु परमेश्वर है और आराधना के योग्य है।

मसीही कलीसिया के प्रथम दिनों से ही यीशु को एक सिद्ध पुरूष से कहीं अधिक बढ़कर माना जाता था और उसके अधिकतर चेले उसे प्रभु– इस जगत का सृष्टिकर्त्ता मानकर ही उसकी आराधना करते थे तो, कॉन्स्टेनटाइन कैसे यीशु की अलौकिकता के सिद्धान्त की खोज कर सकता था जबकि कलीसिया 200 वर्षों से भी अधिक समय से यीशु को परमेश्वर मानती चली आ रही थी? द डा विन्सी कोड इस प्रश्न की ओर ध्यान नहीं देता।

जलते हुए कलीसियाई आदेश

द डा विन्सी कोड यह भी बताती है कि हमारे वर्तमान नये नियम में पाये जाने वाले कलीसियाई आदेशों (प्रेरितों की आँखों देखी वर्णित गवाहियाँ जिन्हें विश्वसनीय रूप में कलीसिया द्वारा मान्यता प्रदान की गयी है।) के अतिरिक्त यीशु के विषय में सभी अभिलेखों का मुद्रण होने पर कॉन्स्टेनटाइन ने रोक लगा दी थी। इसके पश्चात् यह दावा करती है कि नये नियम में घटनाओं के वर्णन को कॉन्स्टेनटाइन और प्रधान मसीही अगुवों (बिशप) द्वारा यीशु का पुर्न उद्‌भव करने के लिये परिवर्तित कर दिया गया था। द डा विन्सी कोड नामक साज़िश का एक और मुख्य तत्व है कि कुल ''80 सुसमाचारों से अधिक'' जिनमें से अधिकाँश के विषय में माना जाता है कि कॉन्स्टेनटाइन द्वारा मुद्रण होने से रोक दिये गये थे, में से नये नियम के चार सुसमाचार प्रसन्नतापूर्वक चुरा लिये गये थे।[5]

यहाँ पर दो केन्द्रीय मुद्दे हैं, और हमें उन दोनों पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। पहला है कि क्या कॉन्स्टेनटाइन ने नये नियम की पुस्तकों का चुनाव करने में पक्षपात किया है या परिवर्तन किया है। दूसरा है कि क्या उसने उन अभिलेखों को प्रतिबन्धित कर दिया जिन्हें बाइबिल में शामिल किया जाना चाहिये था।

पहले मुद्दे के विषय में, दूसरी शताब्दी के कलीसियाई अगुवों और धर्म विरोधियों द्वारा लिखे गये पत्र और अभिलेख नये नियम की पुस्तकों के विस्तृत प्रयोग की एकसमान पुष्टि करते हैं। कॉन्स्टेन्टाइन द्वारा निकाया की महासभा को बुलाने से लगभग 200 वर्ष पूर्व, विधर्मी मार्सियन ने नये नियम की 27 में से 11 पुस्तकों को प्रेरितों की प्रमाणित लेखनी होने के कारण सूचीबद्ध किया।

और उसी काल में, एक दूसरा विधर्मी, वेलेन्टिनस नये नियम के विषयों और अवतरणों की विस्तृत विविधता की ओर संकेत करता है। क्योंकि यह दोनों विधर्मी आरम्भिक कलीसिया की अगुवाई के विरोधी थे, वे ठीक उसी प्रकार नहीं लिखते थे जैसा कि प्रधान मसीही अगुवे चाहते थे। तब भी, आरम्भिक कलीसिया के समान उन्होंने उन्हीं नये नियम की पुस्तकों की ओर संकेत किया जिन्हें हम आज पढ़ते हैं।

अतः, यदि कॉन्स्टेनटाइन और निकाया की महासभा से 200 वर्ष पूर्व से ही नया नियम विस्तृत रूप से प्रयोग में लाया जाता था, तो सम्राट कैसे इसकी खोज कर सकता था अथवा परिवर्तित कर सकता था? उस समय तक कलीसिया दूर–दूर तक फैल चुकी थी और यदि लाखों नही ंतो हजारों में से सैकड़ों विश्वासियों को अपने में शामिल कर चुकी थी जिसमें से सभी लोग नये नियम की घटनाओं के वृत्तान्त से परिचित थे।

अपनी पुस्तक द डा विन्सी डिसेप्शन में, जो द डा विन्सी कोड का विश्लेषण है, डॉ0 इरविन लट्जर टिप्पणी करते हैं।

‘‘कॉन्स्टेनटाइन ने यह तय नहीं किया था कि कौन सी पुस्तकें कलीसियाई आदेश में शामिल होंगी, वास्तव में, निकाया की महासभा में कलीसियाई आदेश का विषय तो उठाया ही नहीं गया था। उस समय तक आरम्भिक कलीसिया पुस्तकों के कलीसियाई आदेशों का अध्ययन कर रही थी। यह निश्चित हो चुका था कि परमेश्वर का वचन दो सौ वर्ष पहले से था।’’[6]

यद्यपि अधिकारिक कलीसियाई आदेश को अनन्तिम रूप प्राप्त होने में वर्षों शेष थे, परन्तु आज का नया नियम निकाया से दो शताब्दियों से कहीं अधिक पहले से ठोस रूप से प्रमाणित सिद्ध हो गया था।

यही बात हमें हमारे दूसरे मुद्दे की ओर ले जाती है; ये रहस्यवादी सुसमाचार क्यों नष्ट कर दिये गये थे और क्यों इन्हें नये नियम से पृथक कर दिया गया था? पुस्तक में, टीबिंग दावा करते हैं कि रहस्यवादी सुसमाचारों की लेखनियों को उन 50 अधिकृत बाइबिलों में से विलुप्त कर दिया गया था जिनको निकाया में कॉन्स्टेनटाइन द्वारा सौंपा किया गया था। वह रोमांचित होकर नेव्यू को बताते हैं :

''क्योंकि कॉन्स्टेनटाइन ने यीशु की मृत्यु के लगभग चार शताब्दियों के उपरान्त यीशु के महत्व को प्रगतिशील कर दिया था, एक अजर मनुष्य के रूप में उसके जीवन की घटनाओं के लेखों–जोखों से जुड़े हज़ारों अभिलेख पहले से ही पाये गये थे। इतिहास रच देने वाली पुस्तकों को पुनः लिखने के लिये कॉन्स्टेनटाइन जानता होगा कि एक साहसी प्रहार करने की आवश्यकता उसे पड़ेगी। इस छलांग के साथ ही मसीही इतिहास का सबसे गम्भीर क्षण .... कॉन्स्टेनटाइन ने बींड़ा उठाया और राजस्व के द्वारा एक नयी बाइबिल रच दी जिसने उन सुसमाचरों का विलोपन कर दिया जो मसीह के मानवीय स्वभाव की विशेषताओं को बयान करते थे और अपनी कल्पना से उन सुसमाचारों को जोड़ दिया जिन्होंने उसे परमेश्वर के तुल्य बना दिया। पूर्व के सुसमाचार अवैध करार दिये गये, इकठ्ठे किये गये और जला दिये गये।''[7]

क्या यह रहस्यवादी लेखनियाँ यीशु मसीह का वास्तविक इतिहास हैं? आइये, यह देखने के लिये एक गहन दृष्टि डालें कि क्या हम सत्यता को काल्पनिक कथा से अलग कर सकते हैं।

गुप्त ''जानकार''

रहस्यवादी सुसमाचार एक समूह की विशेषता बताते हैं जिन्हें रहस्यवादियों के नाम से जाना जाता है (यहाँ बड़े आश्चर्य की बात है।) उनके नाम यूनानी शब्द नॉसिस से उद्धरत हैं जिसका अर्थ है ''ज्ञान''। ये लोग सोचते थे कि उनमें सामान्य लोगों की तुलना में एक छिपा हुआ गुप्त, विशिष्ट ज्ञान है।

52 लेखनियों में से, केवल पाँच सुसमाचार के तौर पर सूचीबद्ध की गयी हैं। जैसा कि हम देखते होंगें कि ये तथाकथित सुसमाचार पर्याप्त रूप से नये नियम के सुसमाचारों मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना से भिन्न हैं।

जैसे–जैसे मसीहियत फैलती गयी, रहस्यवादियों ने अपने विश्वासों में मसीहियत के कुछ सिद्धान्तों और तत्वों को मिला दिया, रहस्यवाद का सार एक बनावटी मसीहियत में बदल गया। संभवतः उन्होंने ऐसा नयी भर्तियों की संख्या बढ़ाने के लिये और यीशु को अपने हित के लिये इश्तहारों में दर्शाया जाने वाला शिशु बनाने के लिये किया। हालांकि, उनकी वैचारिक व्यवस्था को मसीहियत के खॉचे में उचित रूप से बैठाने के लिये, यीशु को अपने विशुद्ध ईश्वरत्व और मानव स्वभाव को हटाकर पुर्न उद्‌भव होने की आवश्यकता थी।

द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ क्रिश्चियनिटी में जॉन मैकमैनर्स ने रहस्यवादियों के मसीही और काल्पनिक विश्वासों के मिश्रण के विषय में लिखा है :

'' रहस्यवाद बहुत सारे तत्वों को दार्शनिक और धार्मिक मतों से मिलाकर बनाया गया परमशक्ति के प्रगटीकरण का मिश्रण था (अभी भी है)। तन्त्र–मन्त्र और पूर्वी देशों का इन्द्रजाल ज्योतिष विद्या, जादूगरी के साथ मिलकर आडम्बर बन गया .... उन्होनें यीशु की उन शिक्षाओं

को चुना जो उनके स्वयं के अनुवाद के आकार के ढाँचे में उचित बैठती थीं (जैसा कि थोमा के सुसमाचार में है) और अपने सर्मथकों को मसीहियत का वैकल्पिक और विरोधी स्वरूप सौंप दिया।''[8]

आरम्भिक आलोचक

ब्राउन के दोषोरोपण के प्रतिकूल, यह कॉन्स्टेनटाइन नहीं था जिसने आत्मिक जनों के मतों को पाखण्ड पूर्ण मानकर कलंकित किया, यह स्वयं प्रेरित थे। प्रथम शताब्दी में यीशु की मृत्यु के ठीक कुछ दशकों उपरान्त दार्शनिकता की एक कोमल पौध स्वयं पनप रही थी। प्रेरित, उस यीशु की सत्यता का विरोध किये जाने के कारण जिसके वे स्वयं चश्मदीद गवाह थे, अपनी शिक्षाओं और लेखनियों में उन मतों का खण्डन करने में लम्बी ऊँचाईयों को छू चुके थे।

उदाहरण के लिये, जाँचें, प्रेरित यूहन्ना ने प्रथम शताब्दी के लगभग अन्त में क्या लिखा :

झूठा कौन है? केवल वह, जो यीशु के मसीह होने से इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है। (1 यूहन्ना 2 : 22)

प्रेरितों की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए, आरम्भिक कलीसियाई अगुवों ने एकमत होकर आत्मिक जनों की निन्दा मसीह विरोधी सम्प्रदाय के रूप में की। निकाया की महासभा के 140 वर्ष पूर्व लिखी गयी कलीसियाई पिता इरेनेअस की लेखनी पुष्टि करती है कि रहस्यवादियों की निन्दा पाखडियों के रूप में कलीसिया द्वारा की गयी। उसने स्वयं भी उनके ''सुसमाचारों'' को नकार दिया। हालांकि नये नियम के चार सुसमाचारों का सन्दर्भ देते हुए, उन्होंने कहा, ''यह सम्भव नहीं है कि सुसमाचार संख्या में उससे अधिक या कम हो सकें जितने कि वे हैं।''[9]

निकाया से सौ वर्ष से भी अधिक पहले तीसरी शताब्दी की शुरूआत में मसीही धर्मशास्त्री ओरिजन ने लिखा : मैं एक ऐसे विशेष सुसमाचार को जानता हूँ जिसे ''थोमा के अनुसार सुसमाचार'' और '' मत्तीआस के अनुसार सुसमाचार'' कहा जाता है और बहुतेरे सुसमाचार हम पढ़ चुके हैं– कहीं ऐसा न हो कि किसी रीति से हम अज्ञानी माने जायें, उन लोगों के कारण जिन्होंने कल्पना की, यदि वे इनसे परिचित हैं तो कुछ ज्ञान अवश्य रखते होंगें। तब पर भी, इन सबके मध्य हमने एकमत होकर उसे स्वीकार किया है जिसे कलीसिया ने प्रमाणित किया है, वह यह है कि केवल चार सुसमाचार हैं जिन्हें स्वीकार करना चाहिए।[10]

यह सब बातें हमें उच्चकोटि के सम्मानीय आरम्भिक कलीसियाई अगुवों के शब्दों में मिली हैं। निकाया की महासभा से कहीं पहले रहस्यवादी गैर–मसीही सम्प्रदाय के रूप में घोषित किये गये थे। परन्तु द डा विन्सी कोड में बहुतेरे प्रमाण हैं जिन्हें प्रश्नात्मक दावे बताया गया है।

कौन सर्वाधिक आकर्षक है?

ब्राउन सुझाव देते हैं कि रहस्यवादी लेखनियों पर मुद्रण का प्रतिबन्ध लगाने की नीतियों में से कॉन्स्टेनटाइन की एक नीति कलीसिया में स्त्रियों का दमन करने की इच्छा के निहित थी। व्यंग्यात्मक रूप से, यह थोमा का रहस्यवादी सुसमाचार है जो स्त्रियों को अनुचित ठहराता है। यह आँखों को हैरत में डाल देने वाले इस कथन (संभवतः पतरस को सन्दर्भित शब्दों) के साथ समाप्त होता है '' मरियम को हमें छोड़कर चले जाना चाहिये, क्योंकि स्त्रियाँ जीवन के योग्य नहीं हैं।'' (114)। तब यीशु पतरस को समझाते हुए कहते हैं कि वह मरियम को पुरूष में परिवर्तित कर देंगें ताकि वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर सके। पढ़े : स्त्रियाॅ निम्न श्रेणी की हैं। प्रदर्शित किये जाने वाली भावनाओं के साथ, स्त्रियों की मुक्ति के लिये युद्ध के नारे के तौर पर रहस्यवादी लेखनियों को ग्रहण करना कठिन है।

ठोस विरोधाभास के तौर पर, बाइबिल के सुसमाचारों में वर्णित यीशु स्त्रियों के साथ सदैव शिष्टता और सम्मानतापूर्ण व्यवहार करते थे। इस तरह के परिवर्तनकारी नये नियम में पाये गये पद स्त्रियों की दशा को उन्नतिशील करने के प्रयासों की बुनियाद माने गये हैं : ''अब न कोई यहूदी रहा, और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।'' (गलतियों 3:28, एन एल टी)।

यीशु मसीह के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं के लेखक

जब रहस्यवादी सुसमाचारों की बात आती है तो, लगभग प्रत्येक पुस्तक नये नियम के चरित्रों के नाम धारण किये हुए है : फिलिप्पुस का सुसमाचार, पतरस का सुसमाचार, मरियम का सुसमाचार, यहूदा का सुसमाचार और क्रमशः (धर्म ज्ञान प्रदान करने वाले विद्यालयों में नाम पुकारने के समान किंचित प्रतीत होता है)। यही वे पुस्तकें हैं जिनके ऊपर साजिश भरे सिद्धान्त जैसे द डा विन्सी कोड आधारित हैं। परन्तु क्या वे कभी अपने झूठे दावे करने वाले लेखकों द्वारा लिखे गये थे?

आत्मिक ज्ञान सम्बन्धी सुसमाचारों का समयकाल लगभग मसीह के 110 से 300 वर्ष पश्चात् है और कोई भी विश्वसनीय विद्वान इस बात पर विश्वास नहीं करता कि उनमें से कोई भी अपने नामाराशियों द्वारा लिखे जा सकते हैं। जेम्स एम0 रॉबिन्सन की विस्तृत ज्ञान से भरपूर द नाग हैमाडी पुस्तकालय में हमें ज्ञात होता है कि रहस्यवादी सुसमाचार ''ढेर सारे गैर सम्बन्धी और गुमनाम लेखकों'' द्वारा लिखे गये थे।[12]

डॉ0 डैरेल एल0 बॉक डेलास थियोलॉजिकल सेमिनरी के नये नियम की अध्ययन शिक्षा के प्रोफेसर लिखते हैं, ''इस सामग्री का अधिकाँश भाग वह है जो मसीही विश्वास की बुनियादों से कुछ पीढ़ियों पूर्व पृथक कर दिया गया, प्रसंगों का आंकलन करते समय स्मरण रखने योग्य एक महत्वपूर्ण बिन्दु।''[13]

नये नियम के विद्वान नॉरमन जैस्लर दो रहस्यवादी सुसमाचारों, पतरस का सुसमाचार और यूहन्ना के कार्यों पर टिप्पणी करते हैं। (ये रहस्यवादी रचनाएँ नये नियम में यूहन्ना और पतरस की पत्रियों को समझकर दुविधा में पड़ जाने के लिये नहीं हैं।)'' रहस्यवादी सुसमाचार प्रेरितों द्वारा नहीं लिखे गये थे, परन्तु दूसरी शताब्दी (और बाद) के मनुष्यों ने अपनी शिक्षाओं में सुधार करने के लिये प्रेरिताई अधिकारों के उपयोग का प्रदर्शनमात्र करते हुए लिखे गये। वर्तमान समय में हम इसे जालसाजी और धोखाधड़ी कहते हैं।''[14]

रहस्यवादी सुसमाचार यीशु के जीवन का ऐतिहासिक वर्णन नहीं हैं परन्तु इसके स्थान पर ये व्यापक रूप से रहस्यों का आवरण ओढ़े हुए, ऐतिहासिक विवरणों जैसे नाम, स्थान और घटनाओं को छोड़े हुए, गोपनीय कथन हैं। यह नये नियम के उन सुसमाचारों पर विरोधात्मक प्रहार हैं, जो यीशु के जीवन, प्रचार–कार्य और वचनों के असंख्य ऐतिहासिक तथ्यों से परिपूर्ण हैं।

श्रीमती यीशु

डा विन्सी नामक साज़िश का सबसे मनोरंजक पहलू यह दावा है कि यीशु और मरियम मगदलीनी का गुप्त विवाह हुआ था जिसके फलस्वरूप एक संतान उत्पन्न हुई, जिसमें उनके रक्त की अविरल धारा थी। इसके अतिरिक्त मरियम मगदलीनी का गर्भ, यीशु की सन्तान को धारण किये हुए द होली ग्रेल नामक पुस्तक में प्रदर्शित है, एक रहस्य जिसे प्राइरी ऑफ सियोन नामक एक कैथोलिक संगठन द्वारा अंतरंगता से छिपाया गया है। सर आइज़ेक न्यूटन, बोटीसेली, विक्टर ह्यूगो और लिओनार्ड द विन्सी, यह सारे सदस्य के रूप में वर्णित हैं।

प्रेम कथा, लोकनिन्दा, गुप्त प्रेम सम्बन्ध, एक साजिशन रचे गये सिद्धान्त के लिये भरपूर सामग्री। परन्तु क्या यह सत्य है? आइये, उन बातों पर गौर करें जो विद्वान कहते हैं।

न्यूज़वीक पत्रिका का एक लेख, जो प्राख्यात विद्वानों की राय का सारांश है, इस निष्कर्ष पर पहुँचकर समाप्त हुआ कि यह सिद्धान्त कि यीशु और मरियम मगदलीनी ने गुप्त रूप से विवाह किया था कोई ऐतिहासिक आधार नहीं रखता।

संभवतः रहस्यवादीयों ने महसूस किया कि प्रणय के सम्बन्ध में नया नियम थोड़ा संकोची है अतः उन्होंने इसे थोड़ा चटपटा बना दिया। कारण जो कुछ भी हो, मसीह के दोश्शताब्दियों पश्चात लिखा गया यह अद्वितीय और अस्पष्ट पद साज़िश भरे सिद्धान्त का बड़ा आधार नहीं है। संभवतः पढ़ने में रोचक, परन्तु निश्चित रूप से इतिहास नहीं।

होली ग्रेल और प्राइरी ऑफ सियोन के विषय में, ब्राउन की काल्पनिक गणनायें पुनः इतिहास को गलत ढंग से पेश करतीं हैं। प्रसिद्ध होली ग्रेल कल्पित रूप में अंतिम भोज के समय

यीशु का प्याला था और मरियम मगदलीनी का इससे कोई सम्बन्ध नहीं था और लिओनाड द विन्सी प्राइरी ऑफ सियोन के विषय में कभी जान ही नहीं सकता था, क्योंकि 1956 तक, उसकी मृत्यु के 437 वर्षों पश्चात तक इसकी स्थापना ही नहीं हुई थी। एक बार पुनः रोचक काल्पनिक कथा, परन्तु कृत्रिम इतिहास।

''गुप्त'' दस्तावेज

परन्तु टीबिंग के प्रगटीकरण कि ''हज़ारों गुप्त दस्तावेज़'' सिद्ध करते हैं कि मसीहियत एक छलावा है, के विषय में क्या? क्या यह बात सत्य हो सकती है?

यदि इस प्रकार के दस्तावेज़ थे, विद्वानों ने मसीहियत का विरोध किया तो यह सब बातें उनके लिये मनोरंजक दिन के समान होतीं। पाखण्डपूर्ण दृष्टिकोण से जो जालसाजी भरी लेखनियाँ आरम्भिक कलीसिया द्वारा ठुकरा दी गयी थीं, गुप्त नहीं है, शताब्दियों से जानी जाती रही हैं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। उन्हें प्रेरितों की प्रमाणिक लेखनियों का अंश कभी भी नहीं माना गया है।

और यदि ब्राउन (टीबिंग) अपोक्रिफा अथवा छद्मनाम– लेख सुसमाचार की ओर संकेत कर रहे हैं, तो बात खुलकर सामने आ जाती है। वे गुप्त नहीं हैं, न ही वे मसीहियत की सिद्धता को नकारते हैं। नये नियम के शोधशास्त्री रेमण्ड ब्राउन ने रहस्यवादी सुसमाचारों के विषय में कहा है, '' हम ऐतिहासिक तौर पर यीशु के सेवाकार्य के विषय में एक भी प्रमाणिक तथ्य की जानकारी नहीं पाते हैं, परन्तु कुछ और नयी कही गयी बातें जो सम्भवतः उसके विषय में हो सकती होगीं।''[18]

जो नया नियम आज हमारे पास है वह प्रमाणिकता के विषय में असंख्य परीक्षणों से होकर गुज़रा है, वह उन रहस्यवादी सुसमाचारों के समान नहीं है। जिनके लेखक गुमनाम हैं और जो कि चश्मदीद गवाह थे भी नहीं। (यीशु डॉक पढ़ने हेतु क्लिक करें) विरोधाभास उनका खण्डन करता है जो साज़िश भरे सिद्धान्तों को बढ़ावा दे रहे हैं। नये नियम के इतिहासकार एफ0एफ0ब्रूस ने लिखा है, ''संसार में प्राचीन साहित्य का कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसने सत्यता की पुष्टि करने वाले इतने उत्तम खज़ाने वाले मूल लेखन अर्थात् नये नियम का आनन्द उठाया हो।''[19]

नये नियम के विद्वान ब्रूस मैट्सगर ने इस बात का प्रगटीकरण किया कि आरम्भिक कलीसिया द्वारा थोमा का सुसमाचार क्यों नहीं अपनाया गयाः ''यह कहना उचित नहीं है कि सभा के कुछ सदस्यों की शासकीय स्वीकृति न मिलने के कारण थोमा के सुसमाचार को पृथक कर दिया गया : इस बात को रखने की सही रीति है कि, थोमा के सुसमाचार ने स्वयं को

पृथक कर दिया। यह यीशु के विषय में दी गयी अन्य गवाहियों के साथ उचित ताल मेल नहीं रख पाया जिन्हें आरंभिक मसीहियों ने विश्वासयोग्य मानकर ग्रहण किया था।'[17]

इतिहास का निर्णय

अतः यीशु मसीह के विषय में भिन्न–भिन्न साजिश भरे सिद्धान्तों को लेकर हमें किस निष्कर्ष पर पहुँचना है? कैरेन किंग, हावर्ड में सभोपदेशक सम्बन्धी इतिहास के प्रोफेसर, ने रहस्यवादी सुसमाचारों के विषय पर बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं जिसमें मगदलीनी की मरियम का सुसमाचार भी सम्मिलित है और रहस्यवाद है क्या? रहस्यवाद की शिक्षाओं का एक मज़बूत वकील होने के नाते किंग इस निष्कर्ष पर पहुँचे, ''साज़िश भरे सिद्धान्त के विषय में यह सारे मत .... सब हाशिये पर टिके हुए विचार हैं जिनका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है।''[20]

ऐतिहासिक प्रमाणों की कमी के बावजूद भी, अभी भी साज़िश भरे सिद्धान्तों की लाखों पुस्तकें बिक रही होंगी और बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्डस स्थापित कर रही हैं। सम्बन्धित क्षेत्र के विद्वानों, कुछ मसीहियों और कुछ ऐसों ने जिनमें विश्वास बिल्कुल भी नहीं था, द डा विन्सी कोड के दावों पर विवाद उत्पन्न किया है। हालांकि आसानी से प्रभावित करने वाली बातों में भी कुछ आश्चर्य होता होगा; क्या वास्तव में इन बातों के पीछे कुछ हो सकता है? पुरस्कृत टी0वी पत्रकार फ्रैंक सेसनो ने इतिहासकार विद्वानों के एक दल से साज़िश भरे सिद्धान्तों के प्रति लोगों में आकर्षण के विषय में पूछा। विसकॉन्सिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर स्टेनली कटलर ने उत्तर दिया, '' हम सब रहस्यों से लगाव रखते हैं परन्तु हम साज़िशों से अधिक लगाव रखते हैं।''[21]

अतः यदि आप यीशु के विषय में एक बड़ा साज़िश भरा सिद्धान्त पढ़ने की चाह रखते हैं तो डैन ब्राउन का उपन्यास द डा विन्सी कोड आपके लिये मात्र एक टिकट हो सकता है। परन्तु यदि आप यीशु से जुड़े सत्य वृत्तान्तों को पढ़ना चाहते हैं तो मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना आपको वापस उन बातों की ओर ले आयेंगें जो चश्मदीद गवाहों ने देखा, सुना और लिखा। आप अपेक्षाकृत जिस पर विश्वास करना चाहेंगें।

अनुसूचीः

1 डैन ब्राउन, द डा विन्सी कोड (न्यूयॉर्क : डबलडे, 2003), 234

2 ब्राउन, 233

3 इरविन लट्ज़र रचित द डा विन्सी डिसेप्शन में वर्णित (व्हीटन, आई एलः टेन्डेल, 2004),19

4 ब्राउन, 233

5 ब्राउन, 231

6 लट्ज़र, 71

7 ब्राउन, 234

8 जॉन मैकमेनर्स, इ डी0, द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ क्रिश्चयनिटी (न्यूयॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002), 28

9 डैरेल एल. बॉक, ब्रेकिंग द डा विन्सी कोड (नैशविले : नैल्सन, 2004), 114.

10 बॉक, 119–120

11 जेम्स एम0 रॉबिन्सन, इ डी0 रचित, द नाग हैमाडी लाइब्रेरी : द डैफिनिटिव ट्रान्सलेशन ऑफ द नॉस्टिक स्क्रिपचर्स (हारपर कॉलिन्स, 1990), 138.

12 आई बिड, 13

13 बॉक, 64

14 नॉरमन जैसलर और रॉन ब्रूक्स, व्हेन स्कोप्टिक्स आस्क (ग्रैन्ड रैपिडस्, एम आई : बेकर, 1998), 156

15 बारबरा कैन्ट्रोविट्ज और ऐनी अण्डरवुड, ''डिकोडिंग द डा विन्सी कोड, ''न्यूज़वीक, दिसम्बर 8, 2003, 54

16 रॉबिन्सन रचित में वर्णित, 126

17 ली स्ट्रोबेल रचित, द केस फॉर क्राइस्ट (ग्रैन्ड रैपिड्स, एम आईः जॉन्डरवेन, 1998), 68 में वर्णित

18 लट्ज़र रचित में वर्णित, 32

19 जोश मैकडॉवेल रचित, द न्यू एविडेंस दैट डिमान्डस् ए वर्डिक्ट (सैन बैरनरडिनो, सी एः हिअर्स लाइफ, 1999, 37) में वर्णित

20 लिंडा कुलमैन और जे टॉलसन, ''जीसस इन अमेरिका, ''यू0एस0 न्यूज़ और वर्ल्ड रिपोर्ट, दिसम्बर 22, 2003, 2

21 स्टेनली कटलर, फ्रैंक सेसनो के साथ साक्षात्कार, ''द गिल्टी मैन् : एन हिस्टॉरिकल रिव्यू, ''हिस्ट्री चैनल, अप्रैल 6, 2004.